'विश्व श्रवण दिवस' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में भाषण

---

1 मार्च 2020

आनंदम ईएनटी अस्पताल, कोटा

आज 'विश्व श्रवण दिवस' के अवसर पर यहाँ आप सबके बीच उपस्थित होना मेरे लिए बहुत खुशी की बात है। मैं आनंदम ईएनटी अस्पताल को धन्यवाद देता हूँ उन्होने मुझे आपके बीच आने का अवसर दिया।

किसी भी मनुष्य का, चाहे वे महिलाएं हों, बच्चे हों, ट्रान्सजेंडर, दिव्यांगजन अथवा समाज के किसी भी अन्य वर्ग से हों, यह बुनियादी मानवाधिकार है कि उन्हें अपनी पूरी क्षमताओं के विकास के समान अवसर प्राप्त हों।

इसी अधिकार को मान्यता देने के लिए पूरे विश्व में एक ओर निःशक्त व्यक्तियों के अधिकारों और दूसरी ओर बधिरता, हियरिंग लॉस के निवारण और हियरिंग केयर के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए 'विश्व श्रवण दिवस' जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

आज यहां आयोजित इस कार्यक्रम में बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी, मैं उससे भाव विभोर हूँ। आप सब बहुत हिम्मत और उंचा मनोबल रख कर जीवन में आगे बढ़ रहे है।

मुझे विश्वास है आप सब की मंजिल बहुत ऊँची होगी, आप अपना, अपने परिवार का नाम उंचा करेंगे एवं समाज में सार्थक योगदान देंगे।

मित्रो, यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास एक ऐसा अस्पताल है जो प्रख्यात ईएनटी सर्जन, डॉ. विक्रांत माथुर और उनकी टीम के सक्षम मार्गदर्शन में पूरी तरह सिर्फ ईएनटी की बीमारियों के उपचार के लिए समर्पित है।

नि:शक्तता कई प्रकार की होती है जिसमें से सुनने की शक्ति में कमी सबसे आम है। सुनने की शक्ति हमारी सबसे महत्वपूर्ण इंद्रियों में से एक इन्द्री है जो हमें दुनिया से जुड़ने के काबिल बनाती है। जैसा मैंने पहले कहा, सुनने की शक्ति हमें दूसरे लोगों से जोड़ती है और बाकी सारी इंद्रियों की तुलना में संवाद में यह अनूठी भूमिका निभाती है।

विख्यात शिक्षाविद और कार्यकर्ता, हेलेन केलर ने कहा था, 'दृष्टिहीनता हमें वस्तुओं से अलग करती है, परंतु बधिरता हमें व्यक्तियों से अलग कर देती है।'

भारत में सुनने की शक्ति की नि:शक्तता के मामले काफी अधिक हैं और 2011 की जनगणना के अनुसार देश में 2.68 करोड़ लोग इस समस्या से पीड़ित हैं। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में की गई खोज से सुनने की शक्ति की नि:शक्तता के उपचार में मदद मिल सकती है। यह जागरूकता उत्पन्न करना कि बीमारी का शीघ्र पता लगाना और शीघ्र उपचार आवश्यक है, इस संबंध में सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

इस समस्या की पहचान अगर शुरुआत में हो जाए तो इलाज आसान हो जाता है। इसके लिए यूनिवर्सल न्यूबोर्न हियरिंग इंजीनियरिंग स्क्रीनिंग (यूएनएसएस) से नवजात शिशुओं में श्रवण शक्ति की पहचान आसानी से की जा सकती है। बस इसके लिए माता-पिता को जागरूक करने की जरूरत है।

बहुत से ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने बधिर होते हुए भी समाज में अपने हुनर से एक अमिट छाप छोड़ी, बीथीवेन का मधुर संगीत हम सबने सुना है, वो पाश्चात्य संगीत के सम्राट कहलाते हैं, 26 वर्ष में उनको सुनना बिलकुल खत्म हो गया था, तब कोई चिकित्सा भी नहीं थी, उनमें पियानो बजाने की विलक्षण प्रतिभा थी, उसमे पारंगत हो गए और अमर हो गए, ऐसे ही थॉमस अल्वा एडिसन जिन्होंने विश्व को बल्ब की सौगात दी, वो सुन नहीं पाते थे|

आप सबने ग्रेनविल रिचर्ड सेमूर रेडमंड का नाम सुना होगा, उनका जन्म अमेरिका में फिलाडेल्फ़िया, पेन्सिलवेनिया के एक जाने माने परिवार में हुआ था| ढाई वर्ष की आयु में ज्वर पीड़ित हुए जिसके इलाज के बाद उन्होने अपनी सुनने की क्षमता खो दी| उन्होंने बड़े होकर कला, चित्रकारी सीखी| उनकी चित्रकारी मशहूर थी| 1905 तक यह एक लैंडस्केप चित्रकार के रूप में जाने लगे थे|

हेलेन केलर को कौन नहीं जानता, वो देख भी नहीं पाती थी और सुन भी नहीं पाती थी| इतनी विषमताओ में उन्होंने मनोबल उंचा रखा और ब्रेल लिपि के उपयोग को प्रचलित किया|

मेरे कहने का अभिप्राय ये है कि अगर कोई शारीरिक अक्षमता है किसी को तो परिवार, समाज और सत्ता सबका ये दायित्व है कि उसकी अवहेलना ना करते हुए, उसके गुणों को ऐसे विकास का मौक़ा मिले कि उनकी क्षमता का पूर्ण उपयोग हो, उनके कार्यो की सराहना हो और वो समाज में एक सकारात्मक योगदान दे सके|

इस दृष्टि से मैं आनंदम ईएनटी अस्पताल के बेहतरीन प्रयासों की सराहना करता हूँ| ये संस्था 1997 से लगातार इस दिशा में प्रयास कर रही है| मेरे क्षेत्र में ऐसे समाज सेवी विचार की संस्था होना मेरे लिए गौरव की बात है| यहाँ ईएनटी सम्बंधित रोगों का इलाज आधुनिक से आधुनिक मशीनों और प्रशिक्षित चिकित्सको द्वारा किया जाता है|

इस चिकित्सालय ने अपनी स्थापना से आज तक बहुत तरक्की की है| मुझे बताया गया है कि ये भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अली यावर जंग नेशनल इंस्टिट्यूट आफ स्पीच थेरेपी से मान्यता प्राप्त है|

अडिप स्कीम के तहत यहाँ बधिर बच्चो को कोक्लेअर इम्प्लांट आदि की सुविधा दी जाती है और अभी तकरीबन सौ बच्चे इससे लाभान्वित हो चुके है| यहाँ रक्तदान शिविर, ऑपरेशन शिविर आदि समय-समय पर लगाए जाते है| यहाँ की डॉक्टर्स की टीम ने सिर्फ भारत ही नहीं अपितु समय-समय पर ज़ाम्बिया, इथोपिया और श्री लंका में भी जाकर अपनी सेवाए दी हैं, जो बहुत ही प्रशंसनीय है|

कोक्लेअर इम्प्लांट आज की आधुनिकतम तकनीक है, एक कोक्लेयर इम्प्लांट (cochlear implant) कान के क्षतिग्रस्त हिस्सों को बाईपास करने में मदद करता है और सीधे श्रवण तंत्रिका (auditory nerve) को उत्तेजित करता है। मशीन द्वारा उत्पन्न सिग्नल (Signals) श्रवण तंत्रिका (auditory nerve) के माध्यम से मस्तिष्क को भेजे जाते हैं, और मस्तिष्क बदले में उन संकेतों को ध्वनियों के रूप में पहचानता है।

इस डिवाइस की सहायता से सुनना सामान्य सुनवाई से काफी अलग है और इसके लिए उपयोग करने के लिए समय की आवश्यकता है। इससे बधिर व्यक्तियों को एक स्वस्थ जीवन, स्वाभिमान, गरिमा को बल मिलता है|

इस दिशा में सरकार भी गंभीर प्रयास कर रही है, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत रिहैबिलिटेशन कौंसिल ऑफ़ इंडिया द्वारा मूक बधिर के लिए विशेष पाठ्यक्रम और कोर्सेज करवाए जा रहे है जिसमें स्नातक स्तर पर स्पीच और हियरिंग में बीएससी, पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स हैं। ऑडियोलॉजी एवं स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी आदि आधुनिक पाठ्यक्रम हैं जिनसे समग्र विकास होता है और बधिर होना कहीं भी करियर में बाधा नहीं बनता है|

आज सोशल मीडिया के जमाने में जानकारी का आदान-प्रदान कर हम हर विषय में जन-चेतना बढ़ा सकते है, ज्यादा से ज्यादा लोगो को इसके प्रति सचेत कर सकते है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग हर तरह की सुविधा का लाभ ले सके|

बधिरों के ज्ञान को बढ़ावा देते हुए कई वर्कशॉप या सभा का आयोजन कर सकते हैं जिसमें कि इनके द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा को साधारण जनता को भी बताया जा सके| बधिरों को तकनीक से अवगत करा सकते हैं जिससे की उनका जीवन पहले से ज़्यादा सुगम व सरल हो सके|

इनके लिए हम इस प्रकार के आयोजन अलग अलग क्षेत्रों में भी कर सकते है| किसी भी प्रकार की सूचनाएँ जो इनसे संबंधित हो उसे सोशल मीडिया के द्वारा बता सकते हैं। कई लुभावने पोस्टर्स बना सकते है या कई अन्य कार्य भी किये जा सकते हैं|

अंत में, मैं पुनः एक बार इस कार्यक्रम के आयोजकों डॉ. विक्रम एवं उनकी टीम को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वो ऐसे ही सामाजिक कार्य करते रहेंगे| आप सभी बच्चों और उनके अभिभावकों को भी बहुत-बहुत शुभकामनायें देता हूँ| आप बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ|